P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

राधेमोहन राय के कहानी–साहित्य में प्रकृति चित्रण

नरेश कुमार सिहाग
शोध–छात्र
हिन्दी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
चेन्नई

सारांश

श्री राधे मोहन राय जी ने अपनी कहानियों में प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है। प्रकृति मानव–जीवन का आधार तथा सब से बड़ी नियामक शक्ति रही है। प्रकृति प्रत्येक युग और प्रत्येक देश में अपने स्वरूप–वैविध्य के कारण कवियों को प्रेरित और प्रभावित करती रही है। अंग्रेजी के विलियम वर्ड बर्थ और हिन्दी के सुमित्रानन्दन पन्त को तो उनके प्रकृति प्रेम के कारण प्रकृति के सुकुमार कवि कहा जाता है। श्री राधे मोहन राय जी ने अपने कथा को प्राकृतिक साहित्य में प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। कहीं संध्या वर्णन, वहीं गोमती गंगा की निर्मल धारा का वर्णन, वहीं भारतीय मेलों का प्रकृति वर्णन, बाग–बगीचों आदि का सुन्दर वर्णन है। इनमें मानवीकरण के साथ अलंकारिकता भी दिखाई देती है।

मुख्य शब्द : श्री राधेमोहन राय, हिन्दू साहित्यकार, प्रकृति प्रेम।

प्रस्तावना

श्री राधेमोहन राय अपनी पुस्तक मेरी सांसों का पागलपन में लिखते हैं – हमारे पूर्वज थे नवल राय, जो अवध के राजा रहे किसी काल खण्ड में।[1] श्री राय के पिता जिगर बरेलवी अपनी पुस्तक उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान (प्रथम खण्ड) में अपने दादा के बारे में लिखते हैं कि बहुत वर्षों पूर्व एक शरीफ़ सक्सेना कायस्थ कुल की एक सुसंस्कृत महिला अपने बच्चों के साथ कन्नौज से आकर बरेली में बस गयी। बच्चे बढ़े, फले–फूले और प्रतिष्ठित हुए। उस परिवार के कुल दीपक राय बहादुर मुंशी दुर्गा प्रसाद अत्यंत पवित्र और प्रतिभाशाली, संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं में पारंगत थे। इसी विद्वता और योग्यता के आधार पर अंग्रेजों के शासनकाल में इंसपैक्टर ऑफ स्कूल्स जैसे अत्यंत प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुए। स्थानीय हिन्दुस्तानियों में सर्वप्रथम यह पद आप ही को प्राप्त हुआ। पैंशन प्राप्त करने के उपरांत अपनी प्यारी मातृभूमि बरेली में आकर शांति से रहना प्रारंभ किया। मानद मजिस्ट्रेट का पद भी था। बरेली को आप के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व पर गर्व था। 1894 में उनकी मृत्यु हुई।[2]

श्री राधेमोहन राय के दादा राय कन्हैया लाल 'दिल' बरेलवी का जन्म 1850 में बरेली में हुआ था। आपका सांवला रंग, मंझोला कद, चौड़ा माथा, गोल चेहरा, चौड़ा सीना और गठा हुआ कसरती शरीर उनका व्यक्तित्व दर्शाता था। लखनऊ के पहनावे की दुपतली टोपी सर पर धारण करते थे। छः कली का अंगस्खा, चूड़ीदार पायजामा उनकी सामान्य पोशाक थी।[3] दिल बरेलवी जी को शायरी और पढ़ने–लिखने व साहित्य का शौक था।[4] आरंभ में आप शिक्षा विभाग में स्कूल मास्टर बने। अपनी व्यक्तिगत योग्यता और अत्यधिक लग्न से काम करने के फलस्वरूप आप जल्दी ही डिप्टी इन्सपैक्टर ऑफ स्कूल्स के पद पर पदौन्नत हो गये। बरेलवी ने सत्रह–अठारह साल की अवस्था से शेर कहना आंरभ किया। मोलाना गुलाम हुसैन 'कद्र' जो गालिब के शिष्य थे का शिष्यत्व आरंभ किया।[5] काव्य रत्न चमकने लगे थे कि अकस्मात् ऐसा झटका लगा। सभी उमंगे समाप्त हो गई। दिल टूट गया। आपके मकान में चोरी हुई। धन और सामान के साथ रचनाओं की कापी भी चोर ले गये। आपकी पाण्डुलिपि चोरी हो जाने के उपरांत आपने न केवल शेर कहना छोड़ दिया बल्कि जो कुछ याद था उसका भी विस्मरण कर दिया।[6] वर्ष 1924 में आपका देहान्त हुआ।

राय कन्हैया लाल ने दो विवाह किये थे, पहली पत्नी से चार पुत्र और एक पुत्री, चारों में सबसे छोटे मेरे पिता। पहली पत्नी की मृत्यु के उपरांत दूसरी पत्नी से चार पुत्र और तीन पुत्री। मेरे पिता जिगर बरेलवी का जन्म वर्ष 1 जनवरी 1890 में हुआ था।[7] जिगर बरेलवी का पूरा नाम शाम मोहन लाल था और 'जिगर' तख़ल्लुस[8] आप वर्ष 1918 में नायब तहसीलदार नियुक्त हुए। जब दूसरा विश्व युद्ध आरम्भ हुआ तो अंग्रेज सरकार के आदेश से जर्मन फौजों के विरुद्ध अंग्रेज फौज की सहायता हेतु भारत में सिपाहियों की भर्ती और 'वार

फण्ड' के लिये धन राशि उपलब्ध कराने का दायित्व तहसीलदारों और नायब तहसीलदारों का था। जिगर ने अपनी जीवनी 'हदीसे–खुदी' में लिखा है कि 'न तो एक भी रंगरूट जबरन भर्ती किया न एक भी पैसा इकट्ठा किया'[9] जिसके कारण जिगर बरेलवी जी का उस समय के अंग्रेज कलेक्टर निदरसोल से सामना हुआ। अति क्रोधी निदरसोल ने आपे से बाहर हो जिगर पर वार करने को डण्डा उठाया। कसरती जिस्म जिगर ने अपनी फौलादी पकड़ से उसकी कलाई जकड़ ली।[10] निदरसोल प्रतिवेदन बिगाड़ नौकरी से निकलवाने की धमकी दे पैर पटकता उल्टे पांव लौट गया। परिणाम यह कि उसने रोगी होने के आधार पर नौकरी के लिये अयोग्य घोषित करा सम्पूर्ण अनिवार्य सेवानिवृत करवा दिया।[11] जिगर बरेलवी 7 मार्च 1976 को पंचतत्व में विलीन हो गये।

अपनी माता जी के बारे में श्री राय लिखते हैं– ''पिता जी का विवाह वर्ष उन्नीस सौ तेरह में ही हो गया था। मेरी वालिदः कानपुर से आई थी, गोरा चिट्टा रंग, सुंदर नैन नक़्श, सामान्य क़द काठी, गृहकार्य में निपुण, सुसंस्कृत और मधुर बोलने वाली वाणी।[12] आप अपनी माता–पिता की ज्येष्ठ सन्तान थी नाम था जय देवी। श्री राय आगे लिखते हैं 'मां ने हम सब को हिन्दी पढाई। माँ पांचवीं कक्षा तक पास थी।[13] आपका जन्म 6 सितम्बर 1939 को बरेली उत्तर प्रदेश में हुआ नाम रखा राधेमोहन और तखल्लुस ''हामी''।[14] राय जी की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। आप छठी कक्षा तक स्कूल ही न गये। पिताजी अंग्रेजी, उर्दू और फारसी तीनों में समान रूप से महारत रखते थे। आपने वर्ष 1960 में मेरठ कालेज मेरठ से अंग्रेजी विषय में एम.ए. पास की। युवावस्था से ही आपने लेखन प्रारम्भ कर दिया था। साठ के दशक में उत्कर्ष, नई सदी आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी। आपने तीन भाषाओं में लेखन कार्य व साहित्य की सभी विधाओं यथा कविता, कहानी ललित निबंध, समालोचना, उपन्यास, अध्यात्म, संस्मरण, आत्मकथा आदि किया है।

भारतवर्ष के आधा दर्जन से भी ज्यादा प्रकाशनों से आपका साहित्य हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हो चुका हैं। आपकी प्रथम पुस्तक 1987 में प्रकाशित हुई थी, तब से यह क्रम वर्तमान में भी जारी है। आप इस समय उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान विषय पर एक शोध पूर्ण पुस्तक श्रृँखला पर कार्य कर रहे हैं जिसके अब तक चार खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। यह एक ऐसा विषय है जिस पर आज तलक किसी भी व्यक्ति का ध्यान नहीं गया। राय साहब के इस कार्य की देश ही नहीं विदेशों में भी सराहना हो रही है। इस श्रृँखला में दस खण्ड प्रकाशित होंगे। राय साहब को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, गुगनराम सोसायटी, बोहल हरियाणा आदि अनेकों संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है। 76 वर्ष की अवस्था में भी श्री राधेमोहन राय साहित्य साधना में रत्त हैं।

श्री राधेमोहन राय ने साहित्य में प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है। प्रकृति जीवन का आधार तथा सबसे बड़ी नियामक शक्ति रही है। यह हर युग और हर देश में अपने रूप–सौन्दर्य तथा स्वरूप–वैविध्य के कारण कवियों को प्रेरित और प्रभावित करती आई है। अंग्रेजी के विलियम वर्ड स्वर्थ और हिन्दी के सुमित्रानन्दन पन्त को तो उनके प्रकृति स्नेह के कारण, प्रकृति के सुकुमार कवि कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में प्रकृति वर्णन करने वाले कवियों की एक लम्बी सूची है, जिनमें भारतेन्द्र हरिशचन्द्र, ठाकुर, जगमोहन, श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद आदि के नाम शामिल हैं। राधेमोहन राय ने अपने साहित्य में प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। नववर्ष का सौन्दर्य वर्णन करते हुए कवि कहता है नव वर्ष की नई सुबह। नया वर्ष, नई सदी, तीसरी शताब्दी का शुभ प्रभात मेरी संवेदना नए अहसासों से भीतर शरीर को कंपकपा गई।[15] रात की विभिषिका वर्णन करता हुआ राय साहब कहते हैं–

चांद सिरहाने आकर बैठे,
जुगनू गति सुनाये,
मेरे अंतर्मन की पीड़ा
शायद कम हो जाए।[16]
मार्च महिने में गर्म होती हवा और
नीरस होते दिनों में मुख से निकला –
हवाएं होने लगी है गर्म,
लम्बे हो चले हैं दिन,
झड़ रहे हं नीम के पत्ते,
बन रहे मधु के नए छते।[17]

प्रकृति के विभिन्न रूपों के महोदारी चित्र राय जी ने अपनी कहानियों में उतारे हैं। भीषण गर्मी के बाद वर्षा का चित्रण है। कही संध्या वर्णन, कहीं गोमती गंगा कि निर्मल धारा का वर्णन, कहीं भारतीय मेलों का प्रकृति वर्णन, बाग–बगीचे आदि का सुन्दर वर्णन है।

मधु मालती के पतों पर अंकित,
आड़ी तिरछी लिखावट को,
मैं यदि पढ़ पाता तो,
पर वैसा कुछ हुआ कहा।[18]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि कविवर राधेमोहन राय ने प्रकृति का मार्मिक चित्रण अपनी कहानियों में किया है। इनमें मानवीकरण के साथ अलंकारिकता भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *राधेमोहन राय : मेरी साँसों का पागलपन, पृष्ठ 164*
2. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान–पृ. 68*
3. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 68*
4. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 69*
5. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 70*
6. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 71*
7. *सं. नरेश सिहाग एडवोकेट : बोहल शोध मंजूषा, जनवरी–जून 2016 अंक*
8. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान–पृ. 147*

9. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 150*
10. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 150*
11. *राधेमोहन राय : उर्दू साहित्य में हिन्दू साहित्यकारों का योगदान –पृ. 151*
12. *राधेमोहन राय : मेरी साँसों का पागलपन, पृष्ठ 21*
13. *राधेमोहन राय : मेरी साँसों का पागलपन –पृ. 30*
14. *साक्षात्कार के दौरान बताया हामी का अर्थ होता है समर्थक।*
15. *राधेमोहन राय : बही लिखकर क्या होगा (कहानी संग्रह), पृ. 2*
16. *राधेमोहन राय : बही लिखकर क्या होगा (कहानी संग्रह), पृ. 73*
17. *राधेमोहन राय : बही लिखकर क्या होगा (कहानी संग्रह), पृ. 77*
18. *राधेमोहन राय : बही लिखकर क्या होगा (कहानी संग्रह), पृ. 115*